اَلْجُزْءُ الثَّالِثُ (٣) وقف لازم

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ

ये ऐसे पैगम्बर हैं के उन में से बाज़ को हम ने बाज़ पर फज़ीलत दी।

مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا

उन में से बाज़ वो हैं जिन से अल्लाह ने कलाम फरमाया और उन में से बाज़ के दरजात बुलन्द फरमाए। और हम ने

عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ

ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) को रोशन मोअजिज़ात दिए और हम ने उन की रूहुल कुदुस के ज़रिए ताईद की।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ

और अगर अल्लाह चाहता तो वो लोग बाहम क़िताल न करते जो उन के बाद हुए

مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا

इस के बाद के उन के पास मोअजिज़ात आए, लेकिन उन्हों ने इखतिलाफ किया।

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

फिर उन में से कुछ वो हैं जो ईमान लाए और उन में से कुछ वो हैं जिन्हों ने कुफ्र किया। और अगर अल्लाह चाहता

مَا اقْتَتَلُوْا ۟ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٣﴾ ع ٣٥

तो वो आपस में क़िताल न करते। लेकिन अल्लाह करते हैं वही जो वो चाहते हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ

ऐ ईमान वालो! खर्च करो उन चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दीं इस से पेहले

اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ

के वो दिन आ जाए जिस में न खरीद व फरोख्त होगी और न दोस्ती और न सिफारिश।

وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٤﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

और काफिर लोग वही ज़ालिम हैं। अल्लाह के सिवा कोई

اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ

माबूद नहीं। वो ज़िन्दा है, सब को थामने वाला है। उस को न ऊँघ आती है और न नींद।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ

उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। कौन है जो

يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ

सिफारिश कर सके उस के पास मगर उस के हुक्म से। अल्लाह खूब जानता है उन चीज़ों को

اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ

जो उन के आगे और उन के पीछे हैं। और वो अल्लाह के इल्म में से किसी एक चीज़ का भी इहाता

مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ

नहीं कर सकते मगर जितना अल्लाह चाहे। अल्लाह की कुर्सी आसमानों और ज़मीन पर वसीअ

وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ

है। और आसमान और ज़मीन की हिफाज़त करना अल्लाह को थकाता नहीं है। और वो बरतर है,

الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾ لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ

अज़मत वाला है। दीन में ज़बर्दस्ती नहीं। यक़ीनन हिदायत गुमराही

مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ

से अलग हो चुकी। फिर जो शैतान के साथ कुफ्र करेगा और अल्लाह पर ईमान लाएगा

فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ

तो यक़ीनन उस ने बड़े मज़बूत हलक़े को मज़बूती से थाम लिया, जिस के लिए टूटना नहीं है।

وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ

और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है।

يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

अल्लाह उन्हें तारीकियों से नूर की तरफ निकालते हैं। और जो काफिर हैं

اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ

उन के दोस्त शैतान हैं। वो उन्हें नूर से ज़ुलमतों की तरफ

اِلَى الظُّلُمٰتِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا

निकालते हैं। वही लोग दोज़खी हैं। वो उस में

خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَاۗجَّ اِبْرٰهٖمَ

हमेशा रहेंगे। क्या आप ने देखा नहीं उस शख्स की तरफ जिस ने हुज्जतबाज़ी की इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से

فِيْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ

अपने रब के बारे में इस वजह से के अल्लाह ने उसे सलतनत दी थी। जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ۭ

मेरा रब वो है जो ज़िन्दगी देता है और मौत देता है। तो उस ने कहा के मैं भी ज़िन्दगी देता हूँ और मैं भी मौत देता

قَالَ اِبْرٰهِمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِیْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ

हूँ। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन अल्लाह सूरज को मशरिक़ से लाता है,

فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِیْ كَفَرَ ؕ

तो तू उस को मग़रिब की तरफ से ले आ, फिर वो काफिर मबहूत रेह गया।

وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ۝۲۵۸ اَوْ كَالَّذِیْ مَرَّ

और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देते। या उस शख्स (उज़ैर अलैहिस्सलाम) की तरह जो एक बस्ती पर गुज़रे इस

عَلٰی قَرْیَةٍ وَّهِیَ خَاوِیَةٌ عَلٰی عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰی

हाल में के वो अपनी छतों पर गिरी हुई थी। उस (उज़ैर अलैहिस्सलाम) ने कहा के कैसे इस बस्ती को उस के वीरान हो

یُحْیٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ

जाने के बाद अल्लाह ज़िन्दा करेंगे? फिर अल्लाह ने उस शख्स (उज़ैर अलैहिस्सलाम) को मौत दे दी

عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ یَوْمًا

सौ साल तक, फिर उन्हें ज़िन्दा कर के उठाया। अल्लाह ने पूछा के आप कितनी मुद्दत तक इस हाल में रहे? वो (उज़ैर अलैहिस्सलाम)

اَوْ بَعْضَ یَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ

केहने लगे के मैं एक दिन या एक दिन से भी कम रहा। अल्लाह ने फरमाया बल्के तुम रहे पूरे सौ साल, इस

اِلٰی طَعَامِكَ وَ شَرَابِكَ لَمْ یَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ

लिए आप अपने खाने की चीज़ों को और पीने की चीज़ों को देखिए के वो सड़ी भी नहीं। और आप देखिए अपने

اِلٰی حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰیَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ

दराज़गोश की तरफ। और इस लिए ताके हम आप को इन्सानों के लिए निशानी बनाएं। और आप देखिए

اِلَی الْعِظَامِ كَیْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ

हड्डियों की तरफ के हम उन्हें कैसे जोड़ते हैं, फिर उन पर गोश्त पेहनाते हैं।

فَلَمَّا تَبَیَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ

फिर जब उस (उज़ैर अलैहिस्सलाम) के सामने ये वाज़ेह हो गया तो वो केहने लगे के मैं ये यक़ीन रखता हूँ के अल्लाह

قَدِیْرٌ ۝۲۵۹ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ تُحْیِ

हर चीज़ पर क़ुदरत वाले हैं। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! आप मुझे दिखाइए

الْمَوْتٰی ؕ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰی وَلٰكِنْ

के आप कैसे मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे? तो अल्लाह ने पूछा क्या आप ईमान नहीं रखते? इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने

لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِيْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ

अर्ज़ किया क्यूं नहीं? लेकिन इस लिए ताके मेरा दिल मुतमइन हो जाए। तो अल्लाह ने फरमाया के फिर आप परिन्दों में से चार

فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ

परिन्दे लीजिए, फिर उन को अपनी तरफ मानूस कर लीजिए, फिर हर पहाड़ पर उन का एक एक हिस्सा

جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَاعْلَمْ

रख दीजिए, फिर आप उन को बुलाइए, तो वो आप के पास तेज़ चलते हुए आएंगे। और जान लो के

اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ ع ٣٥

यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। उन लोगों का हाल जो अपने माल अल्लाह के

اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ

रास्ते में खर्च करते हैं एक दाने की तरह है जिस ने सात खोशे

سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ

उगाए, हर एक खोशे में सौ दाने हैं। और अल्लाह कई गुना करते हैं

لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

जिस के लिए चाहते हैं। और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। जो लोग अपने माल को

اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا

अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं, फिर अपने खर्च करने के पीछे वो नहीं लाते

مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ

एहसान जतलाने को और न ईज़ा पहोंचाने को, तो उन के लिए उन का अज्र है उन के रब के पास।

وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ

और न उन पर खौफ होगा और न वो गमगीन होंगे। भली बात केहना

وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ

और मुआफ कर देना बेहतर है ऐसे सदक़े से जिस के पीछे ईज़ा पहोंचाना हो।

وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا

और अल्लाह बेनियाज़ है, हिल्म वाला है। ऐ ईमान वालो! तुम अपने सदक़ात एहसान

صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ

जतला कर के और ईज़ा पहोंचा कर बातिल मत करो, उस शख्स की तरह जो अपना माल

مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ

खर्च करता है लोगों के दिखावे के लिए और जो ईमान नहीं रखता अल्लाह पर और आखिरी दिन पर।

فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ

फिर उस शख्स का हाल उस चटान की तरह है जिस पर मिट्टी हो, फिर उसे तेज़

وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَىْءٍ

बारिश पहोंचे, फिर उसे साफ कर छोड़े। वो अपनी कमाई में से किसी चीज़ पर क़ादिर

مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦٤﴾

नहीं होंगे। और अल्लाह काफिर लोगों को हिदायत नहीं देते।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ

और उन लोगों का हाल जो अपने मालों को खर्च करते हैं अल्लाह की रज़ा तलब

اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ

करने के लिए और अपनी तरफ से अमली सुबूत पेश करते हुए उस बाग़ की तरह है जो टीले पर हो,

اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ

जिस को ज़ोर की बारिश पहोंची हो, फिर वो अपने फल दुगने पैदा करता हो। फिर अगर

لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٦٥﴾

उसे ज़्यादा बारिश न पहोंचे, तो फिर थोड़ी बारिश भी काफी हो जाए। और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं।

اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ

क्या तुम में से कोई एक चाहेगा ये के उस के लिए खजूर और अंगूर का एक

وَّ اَعْنَابٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا

बाग़ हो, जिस के नीचे से नेहरें बेहती हों, उस के लिए उस बाग़ में

مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ

तमाम फल हों और उसे बुढ़ापा पहोंच चुका हो और उस की कमज़ोर

ضُعَفَآءُ ۖ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ

औलाद हो। फिर उस बाग़ पर एक बगौला आए जिस में आग हो, फिर वो बाग़ जल जाए।

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾ ع ٣٣

इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें बयान करते हैं ताके तुम गौर व फिक्र करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ

ऐ ईमान वालो! तुम खर्च करो उन उम्दा चीज़ों में से जो तुम ने कमाई हैं

وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا

और उन चीज़ों में से जो हम ने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाली हैं। और तुम उस में से

الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ

बुरी चीज़ का क़स्द मत करो खर्च करने के लिए और खुद तुम भी उस को नहीं लोगे मगर

اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٢٦٧

ये के तुम उस में चश्मपोशी करो। और जान लो के अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है।

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاۗءِ ۚ

शैतान तुम्हें फक्र से डराता है और तुम्हें बेहयाई का हुक्म देता है।

وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَ فَضْلًا ۭ وَاللّٰهُ

और अल्लाह अपनी तरफ से मग़फिरत और फ़ज़्ल का तुम से वादा करता है। और अल्लाह

وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝٢٦٨ يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَاۗءُ ۚ وَمَنْ

वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। अल्लाह हिक्मत देते हैं जिसे चाहते हैं। और जिसे

يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ۭ

हिक्मत दी गई, उसे बड़ी भलाई दी गई।

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٢٦٩ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ

और नसीहत हासिल नहीं करते मगर अक़्ल वाले। और जो खर्च

مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ

तुम करो या जो नज़र तुम मानो तो यक़ीनन अल्लाह

يَعْلَمُهٗ ۭ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝٢٧٠ اِنْ تُبْدُوا

उसे जानते हैं। और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं होगा। अगर तुम सदक़ात

الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا

अलानिया दो तो ये अच्छी बात है। और अगर तुम उन को छुपा कर फ़ुक़रा को

الْفُقَرَاۗءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ

दो तो ये तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है। और अल्लाह तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर

سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾ لَيْسَ

कर देगा। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। आप के

عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

ज़िम्मे नहीं है उन को हिदायत देना, लेकिन अल्लाह हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं।

وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ

और जो माल तुम खर्च करो तो वो तुम्हारे अपने ही लिए है। और तुम खर्च नहीं करते हो

اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ

मगर अल्लाह की रज़ा तलब करने के लिए। और जो माल खर्च करोगे

يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٢﴾ لِلْفُقَرَآءِ

तो वो तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम से कमी नहीं की जाएगी। (सदक़ात) उन फुक़रा के लिए हैं

الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ

जो अल्लाह के रास्ते में घिरे रेहते हैं, जो ज़मीन में सफर करने की

ضَرْبًا فِى الْاَرْضِ ز يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ

ताक़त नहीं रखते, नावाक़िफ आदमी उन को न मांगने की वजह से मालदार

مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ

समझता है। आप उन के चेहरे से उन को पेहचान लोगे। वो लोगों से इसरार से सवाल

الربع ٣٧ ع ٧ ٥ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢٧٣﴾

नहीं करते। और जो माल तुम खर्च करोगे तो यक़ीनन अल्लाह उसे जानते हैं।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا

जो लोग अपने मालों को खर्च करते हैं रात में और दिन में चुपके

وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ

और अलानिया तो उन के लिए उन के रब के पास उन का अज्र है। और उन पर न खौफ

وقف منزل عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٤﴾ اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ

होगा और न वो ग़मगीन होंगे। वो लोग जो सूद

الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِىْ يَتَخَبَّطُهُ

खाते हैं वो (क़ब्रों से) नहीं उठेंगे मगर ऐसा जैसा के उठता है वो शख्स जिसे शैतान

الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا

ने छू कर के खबती बना दिया हो। ये इस वजह से के उन्हों ने कहा के

اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ

وقف لازم

बैअ तो सूद ही की तरह है। हालांके अल्लाह ने बैअ को हलाल किया है और सूद को हराम क़रार दिया है।

فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ

फिर जिस शख्स के पास उस के रब की तरफ से नसीहत आए, फिर वो रूक जाए तो उस के लिए वो है

مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ

जो पेहले हो चुका है। और उस का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द है। और जो दोबारा ऐसा करेगा तो ये

اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا

लोग दोज़ख़ी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। अल्लाह सूद को मिटाते हैं

وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾

और सदक़ात को बढ़ाते हैं। और अल्लाह किसी गुनहगार काफिर से महब्बत नहीं करते।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ

यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और नमाज़ क़ाइम की

وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ

और ज़कात दी, उन के लिए उन का अज्र है उन के रब के पास। और न उन पर खौफ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا

होगा और न वो ग़मगीन होंगे। ऐ ईमान वालो!

اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِىَ مِنَ الرِّبٰٓوا اِنْ كُنْتُمْ

अल्लाह से डरो और छोड़ दो उस सूद को जो बाक़ी रेह गया है अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ

ईमान वाले हो। फिर अगर ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से

مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ

ऐलाने जंग है। और अगर तुम तौबा करो तो तुम्हारे लिए तुम्हारे अस्ल माल हैं।

لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٩﴾ وَاِنْ كَانَ ذُوْ

न तुम ज़ुल्म करोगे और न तुम पर ज़ुल्म किया जाएगा। और अगर वो कर्ज़ लेने वाला

عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ

तंगदस्त हो तो उसे वुस्अत हासिल होने तक मोहलत दी जाए। और ये के मुआफ कर दो तो ये तुम्हारे लिए

لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ

ज़्यादा बेहतर है अगर तुम जानते हो। और तुम डरो उस दिन से जिस दिन में तुम

فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۫ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ

अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे। फिर हर शख्स को पूरा पूरा बदला दिया जाएगा उन आमाल का जो उस ने किए,

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا ع ٣٤

और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। ऐ ईमान वालो!

اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ

जब तुम आपस में कर्ज़ का लेन देन करो किसी वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिए, तो उस को लिख लिया करो।

وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۪ وَلَا يَاْبَ

और चाहिए के तुम्हारे दरमियान लिखने वाला इन्साफ से लिखे। और लिखने वाला इन्कार

كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ

न करे लिखने से जैसा के अल्लाह ने उस को इल्म दिया है, तो उसे चाहिए के लिखे। और लिखवाए वो शख्स

الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ

जिस के ज़िम्मे हक़ है और चाहिए के वो अल्लाह से डरे जो उस का रब है और वो उस में से कुछ भी कम

مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا

न करे। फिर अगर वो शख्स जिस के ज़िम्मे हक़ है वो बेवकूफ हो

اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ

या कमज़ोर हो या लिखवा न सकता हो तो लिखवाए

وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ

उस का वली इन्साफ से। और तुम अपने मर्दों में से दो गवाह

مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ

बना लो। फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें होनी

مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا

चाहिएं उन गवाहों में से जिन को तुम पसन्द करते हो, इस वजह से के उन दो औरतों में से एक भूल

فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ

जाए तो उन में से एक दूसरी को याद दिलाए। और गवाह इन्कार न करें

اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا

जब उन्हें बुलाया जाए। और न उकताओ इस से के तुम उस को लिखो, चाहे छोटी रक़म हो या बड़ी,

اِلٰٓى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ

उस की मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिए। ये ज़्यादा इन्साफ वाला है अल्लाह के नज़दीक और गवाही को ज़्यादा सीधा रखने वाला है

وَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً

और इस के ज़्यादा क़रीब है के तुम शक न करो, मगर ये के वो मौजूद (नक़द, कैश)

حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ

तिजारत हो जिस का तुम आपस में लेन देन करते हो, तो तुम पर कोई गुनाह

جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪

नहीं है के तुम उस को न लिखो। और तुम गवाह बना लो जब तुम आपस में खरीद व फरोख्त करो।

وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ وَاِنْ تَفْعَلُوْا

और लिखने वाले को और गवाह को ज़रर न पहोंचाया जाए। और अगर तुम ऐसा करोगे

فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ

तो ये तुम्हारे वास्ते गुनाह है। और अल्लाह से डरो। और अल्लाह तुम्हें तालीम देते हैं।

وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٢﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ

और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं। और अगर तुम सफर पर हो

وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ

और किसी लिखने वाले को न पाओ, तो फिर रहन है जिस पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए। फिर अगर तुम में से एक दूसरे का

بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ

ऐतेबार करे, तो चाहिए के अमानत अदा कर दे वो शख्स जिस के पास अमानत रखी गई

وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا

और चाहिए के वो अल्लाह से डरे जो उस का रब है। और तुम गवाही को मत छुपाओ। और जो उस को छुपाएगा

فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٣﴾ ع ٣٩

तो यक़ीनन उस का दिल गुनहगार है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल खूब जानते हैं।

لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا

अल्लाह की ममलूक हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। और अगर ज़ाहिर करो

مَا فِیْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ یُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ

उन बातों को जो तुम्हारे दिलों में हैं या तुम उन को छुपाओ तब भी अल्लाह तुम से उन का मुहासबा करेगा।

فَیَغْفِرُ لِمَنْ یَّشَآءُ وَیُعَذِّبُ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ

फिर बख्श देगा जिस के लिए चाहेगा और अज़ाब देगा जिसे चाहेगा। और अल्लाह

عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۸۴﴾ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ

हर चीज़ पर क़ुदरत वाले हैं। रसूल ईमान ले आए उस पर जो उन की तरफ उतारा गया

اِلَیْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

उन के रब की तरफ से और ईमान ले आए ईमान वाले भी। सब के सब ईमान ले आए अल्लाह पर

وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۫ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ

और उस के फरिश्तों और उस की किताबों और उस के पैगम्बरों पर। (वो केहते हैं के) उस के पैगम्बरों में से किसी

مِّنْ رُّسُلِهٖ ۫ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ

के दरमियान हम तफरीक़ नहीं करते। और वो केहते हैं के हम ने सुना और हम ने खुशी से मान लिया।

رَبَّنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْرُ ﴿۲۸۵﴾ لَا یُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا

ऐ हमारे रब! तू हमारी मग़फिरत कर दे और तेरी ही तरफ लौटना है। अल्लाह किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाते मगर

اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَیْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ

उस की वुस्अत के मुताबिक़। उस के लिए वो आमाल हैं जो उस ने किए और उस के ज़िम्मे वो गुनाह पड़ेंगे जो उस ने

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِیْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا

कमाए। ऐ हमारे रब! तू हमारा मुआखज़ा मत कर अगर हम भूल जाएं या हम चूक जाएं। ऐ हमारे रब!

وَلَا تَحْمِلْ عَلَیْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَی الَّذِیْنَ

और तू हम पर न लाद बोझ जैसा के तू ने उस को लादा उन लोगों पर जो

مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ

हम से पेहले थे। ऐ हमारे रब! और तू हम पर न लाद उस को जिस की हम में ताक़त नहीं।

وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا

और तू हमें मुआफ कर दे। और हमें बख्श दे। और हम पर रहम फरमा। तू हमारा मौला है,

فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ ع ٤٠ ٣ ٨

तू काफिर क़ौम के खिलाफ हमारी नुसरत फरमा।

ايَاتُهَا ٢٠٠ (٣) سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِيَّةٌ (٨٩) رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

उस में २०० आयतें हैं सूरह आले इमरान मदीना में नाज़िल हुई और २० रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ

अलिफ लाम मीम। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो ज़िन्दा है, सब को थामने वाला है। उस ने आप पर

عَلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ

ये बरहक़ किताब उतारी जो सच्चा बतलाने वाली है उन किताबों को जो इस से पेहले थीं,

وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَ الْاِنْجِیْلَ ﴿٣﴾ مِنْ قَبْلُ هُدًى

और उस ने तौरात और इन्जील इन्सानों की हिदायत के लिए इस से पेहले उतारी। और उसी ने हक़ और बातिल

لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ

के दरमियान फैसला करने वाली किताब (कुरआन) नाज़िल की। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया अल्लाह की

اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ ذُوانْتِقَامٍ ﴿٤﴾

आयात के साथ, उन के लिए सख्त अज़ाब है। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, इन्तिक़ाम लेने वाला है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَخْفٰی عَلَیْهِ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا

यक़ीनन अल्लाह पर कोई चीज़ मखफी नहीं है, न ज़मीन में और न

فِی السَّمَآءِ ﴿٥﴾ هُوَ الَّذِیْ یُصَوِّرُكُمْ فِی الْاَرْحَامِ كَیْفَ

आसमान में। वही तुम्हारी सूरतें बनाता है बच्चेदानियों में जिस तरह

یَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿٦﴾ هُوَ

वो चाहता है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो ज़बर्दस्त है, हिकमत वाला है। उसी ने

الَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰیٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ

आप पर ये किताब उतारी, इस में से कुछ आयतें मुहकम (इश्तिबाहे मुराद से महफूज़) हैं,

هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِیْنَ

वही अस्ल किताब हैं, और दूसरी आयतें मुतशाबिहात हैं। फिर अलबत्ता वो लोग

فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ

जिन के दिलों में कजी है वो उस में से मुतशाबिहात के पीछे पड़ते हैं फितनातलबी

الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ

की गर्ज़ से और उन का मतलब मालूम करने के लिए। हालांके उन का मतलब सिवाए अल्लाह के कोई

اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ

नहीं जानता। और जो इल्म (दीन) में मज़बूत हैं वो केहते हैं के हम सब पर ईमान ले आए, ये सब की सब

مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٧

आयतें हमारे रब की तरफ से हैं। और नसीहत हासिल नहीं करते मगर अक़्ल वाले।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ

ऐ हमारे रब! तू हमारे दिलों को टेढ़ा मत कर इस के बाद के तू ने हमें हिदायत दी और तू

لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝٨

हमारे लिए अपनी तरफ से रहमत अता फरमा। यक़ीनन तू बहोत अता करने वाला है।

رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ

ऐ हमारे रब! यक़ीनन तू इन्सानों को जमा करने वाला है ऐसे दिन में जिस में कोई शक नहीं।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ع ٩

यक़ीनन अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करेंगे। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

बिलकुल उन के काम नहीं आएंगे न उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह के मुक़ाबले में

شَيْـًٔا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝١٠ كَدَاْبِ اٰلِ

ज़रा भी। और यही लोग आग का ईंधन हैं। उन का हाल आले फिरऔन के

فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ

हाल की तरह है और उन लोगों के हाल की तरह है जो उन से पेहले थे, जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया।

فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝١١

फिर अल्लाह ने उन को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। और अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى

आप काफिरों से फरमा दीजिए के अन्क़रीब तुम मग़लूब किए जाओगे और जहन्नम की तरफ तुम इकट्ठे

جَهَنَّمَ ؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٢﴾ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ

किए जाओगे। और वो बुरा ठिकाना है। यक़ीनन तुम्हारे लिए दो लशकरों में

فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

बहोत बड़ा मोअजिज़ा था जो बाहम मुक़ाबिल हुए थे। एक लशकर तो क़िताल कर रहा था अल्लाह के रास्ते में

وَ اُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْىَ الْعَيْنِ ؕ

और दूसरा लशकर काफिर था। ये काफिर लशकर उन मुसलमानों को अपने से दुगना देख रहा था खुली आँखों से।

وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً

और अल्लाह अपनी नुसरत से मदद करते हैं जिस की चाहते हैं। यक़ीनन इस में इबरत है

لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿١٣﴾ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ

आँखों वालों के लिए। इन्सानों के लिए मुज़य्यन की गई मरग़ूब चीज़ों की महब्बत

مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ

यानी औरतें और बेटे और ढेर लगाए हुए

مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ

सौने और चाँदी और निशान लगाए हुए घोड़े

وَ الْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

और चौपाए और खेती। ये दुन्यवी ज़िन्दगी का सामान है।

وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ

और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। आप फरमा दीजिए क्या मैं तुम्हें

بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ

खबर दूं इस से बेहतर चीज़ की? उन लोगों के लिए जो मुत्तक़ी हैं (उन के लिए) अपने रब के पास

جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

जन्नतें होंगी जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, वो उन में हमेशा रहेंगे,

وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ

और साफ सुथरी बीवियाँ होंगी और अल्लाह की तरफ से खुशनूदी मिलेगी। और अल्लाह

بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾ اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اِنَّنَاۤ اٰمَنَّا

बन्दों को देख रहे हैं। वो लोग जो केहते हैं के ऐ हमारे रब! यक़ीनन हम ईमान ले आए

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۚ﴿١٦﴾ اَلصّٰبِرِيْنَ

तो हमारे लिए हमारे गुनाहों की मग़फिरत कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा ले। जो सब्र करने वाले

وَ الصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ

और सच बोलने वाले और फरमांबरदारी करने वाले और खर्च करने वाले और सहर के वक़्त मग़फिरत तलब

بِالْاَسْحَارِ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ

करने वाले हैं। अल्लाह गवाही देते हैं इस बात की के उस के सिवा कोई माबूद नहीं

وَ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ

और फरिश्ते भी गवाही देते हैं और इल्म वाले भी गवाही देते हैं, (इस हाल में के) अल्लाह इन्साफ के

النصف اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ﴿١٨﴾ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۗ

साथ क़ाइम हैं। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। यक़ीनन दीन तो अल्लाह के नज़दीक

وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ

सिर्फ इस्लाम ही है। और इखतिलाफ नहीं किया उन लोगों ने जिन को किताब दी गई मगर इस के बाद के

مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَ مَنْ يَّكْفُرْ

उन के पास इल्म आया आपस की ज़िद की वजह से। और जो भी अल्लाह की आयतों

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ﴿١٩﴾

के साथ कुफ्र करेगा तो यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाले हैं।

فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ

फिर अगर वो आप से हुज्जतबाज़ी करें तो आप फरमा दीजिए के मैं ने तो अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ कर लिया है और उन्हों ने भी जिन्हों ने

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَ الْاُمِّيّٖنَ ءَ اَسْلَمْتُمْ ؕ

मेरा इत्तिबा किया। और आप एहले किताब से और अनपढ़ लोगों (मुशरिकीने अरब) से फरमा दीजिए के क्या तुम इस्लाम लाते हो?

فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

फिर अगर वो इस्लाम ले आएं तो वो हिदायतयाफता होंगे। और अगर वो मुंह मोड़ें तो आप के ज़िम्मे

ع ٢ عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾ اِنَّ

सिर्फ पहोंचा देना है। और अल्लाह बन्दों को देख रहे हैं। यक़ीनन

الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

वो लोग जो कुफ्र करते हैं अल्लाह की आयात के साथ और अम्बिया को नाहक़

بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ

क़त्ल करते हैं और उन को भी क़त्ल करते हैं जो लोगों में से इन्साफ

مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢١﴾ اُولٰٓئِكَ

का हुक्म करते हैं, तो आप उन को दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। ये वो लोग हैं

الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫

जिन के आमाल ज़ायेअ हो गए दुन्या और आख़िरत में

وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا

और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन को

مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ

किताब का एक हिस्सा दिया गया, उन को बुलाया जाता है अल्लाह की किताब की तरफ ताके उन के दरमियान वो फैसला करे,

ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾

फिर उन में से एक जमाअत ऐराज़ करते हुए रूगरदानी करती है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا

ये इस वजह से के उन्हों ने कहा के हमें आग हरगिज़ नहीं छुएगी मगर चन्द गिने

مَّعْدُوْدٰتٍ ۖ وَّ غَرَّهُمْ فِىْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا

चुने दिन। और उन को धोके में डाल रखा है उन के दीन के बारे में उन चीज़ों ने

يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ

जिन को वो ख़ुद घड़ते हैं। फिर क्या हाल होगा जब हम उन को जमा करेंगे ऐसे दिन में जिस में

فِيْهِ ۗ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا

शक नहीं। और हर शख़्स को पूरा पूरा बदला दिया जाएगा उस अमल का जो उस ने किया और उन पर ज़ुल्म

يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ

नहीं किया जाएगा। आप फरमा दीजिए के ऐ अल्लाह! सलतनत के मालिक! तू सलतनत देता है

مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَتُعِزُّ

जिसे चाहता है और सलतनत छीनता है जिस से चाहता है। और तू इज़्ज़त देता है

مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ

जिसे चाहता है और तू ज़िल्लत देता है जिसे चाहता है। तेरे ही हाथ में भलाई है। यक़ीनन तू

عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿٢٦﴾ تُوْلِجُ الَّیْلَ فِی النَّهَارِ
हर चीज़ पर कुदरत वाला है। तू रात को दिन में दाखिल करता है

وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّیْلِ ز وَ تُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ
और दिन को रात में दाखिल करता है। और ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है

وَ تُخْرِجُ الْمَیِّتَ مِنَ الْحَیِّ ز وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ
और मुर्दे को ज़िन्दा से निकालता है। और तू जिसे चाहता है, बेहिसाब

بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا یَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِیْنَ
रोज़ी देता है। ईमान वाले काफिरों को दोस्त

اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَ ج وَمَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ
न बनाएं ईमान वालों को छोड़ कर। और जो ऐसा करेगा,

فَلَیْسَ مِنَ اللّٰهِ فِیْ شَیْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ
उस का अल्लाह से किसी भी चीज़ का तअल्लुक़ नहीं है मगर ये के तुम कुफ्फार से किसी तरह

تُقٰىةً ط وَیُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ط وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِیْرُ ﴿٢٨﴾
बचना चाहो। और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराते हैं। और अल्लाह ही की तरफ लौटना है।

قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِیْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ یَعْلَمْهُ
आप फरमा दीजिए अगर तुम छुपाओ उन चीज़ों को जो तुम्हारे सीनों में हैं या तुम उन को ज़ाहिर करो, तब भी अल्लाह

اللّٰهُ ط وَیَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ط
उन्हें जानते हैं। और अल्लाह जानते हैं उन तमाम चीज़ों को जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

معانقة ٢ عند المتأخرين ١٢

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿٢٩﴾ یَوْمَ تَجِدُ كُلُّ
और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। जिस दिन हर शख्स उन आमाल को

نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَیْرٍ مُّحْضَرًا ۛ وَّمَا عَمِلَتْ
जो उस ने खैर में से किए हाज़िर पाएगा और अपने किए हुए बुरे आमाल को भी

مِنْ سُوْٓءٍ ۛ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَیْنَهَا وَ بَیْنَهٗٓ اَمَدًا ۢ بَعِیْدًا ط
हाज़िर पाएगा, तो वो चाहेगा के काश के उस के दरमियान और उस दिन के दरमियान बड़ी दूर की मसाफत होती।

ع ٣ ١٠ ١١ وَیُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ط وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ ۢ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾
और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराते हैं। और अल्लाह बन्दों पर बहोत महरबान हैं।

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

आप फरमा दीजिए अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो, तो मेरा इत्तिबा करो, तो अल्लाह तुम्हें महबूब बना लेगा

وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

और तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा। और अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

आप फरमा दीजिए तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर वो मुंह फेर लें तो यक़ीनन अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ

काफिरों से महब्बत नहीं करते। यक़ीनन अल्लाह ने मुन्तखब किया आदम (अलैहिस्सलाम) को

وَ نُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾

और नूह (अलैहिस्सलाम) और आले इब्राहीम और आले इमरान को तमाम जहानों (जहान वालों) पर।

ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾

जो एक दूसरे की औलाद हैं। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं।

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ

जब के इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब! मैं ने आप की नज़र कर दिया

مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ

आज़ाद बना कर इस बच्चे को जो मेरे पेट में है, तो आप इसे मेरी तरफ से क़बूल कर लीजिए। यक़ीनन आप

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ

सुनने वाले, इल्म वाले हैं। फिर जब इमरान की बीवी ने उस को जना तो केहने लगी ऐ मेरे रब!

اِنِّيْ وَضَعْتُهَاۤ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ وَلَيْسَ

मैं ने तो इस को लड़की जना। हालांके अल्लाह खूब जानता है उस को जो उस ने जना। और

الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ

लड़का इस लड़की के बराबर नहीं हो सकता। और मैं ने उस का नाम मरयम रखा

وَاِنِّيْۤ اُعِيْذُهَا بِكَ وَ ذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾

और मैं उसे और उस की औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूँ।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّ اَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا

फिर उन के रब ने उन को कबूल किया अच्छा कबूल करना और मरयम को बढ़ाया अच्छी तरह

حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۭ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا

बढ़ाना। और मरयम (अलैहस्सलाम) की कफालत की ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने। जब कभी मरयम (अलैहस्सलाम) के पास दाखिल

الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى

होते ज़करीया (अलैहिस्सलाम) मेहराब में, तो मरयम (अलैहस्सलाम) के पास खाने की चीज़ें पाते। पूछते ऐ मरयम!

لَكِ هٰذَا ۭ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ

कहां से तेरे पास ये चीज़ें आईं? तो मरयम (अलैहस्सलाम) केहतीं के ये अल्लाह की तरफ से है। यक़ीनन अल्लाह बेहिसाब

مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا

रोज़ी देते हैं जिसे चाहते हैं। वहीं पर ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब से

رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً

दुआ की। केहने लगे ऐ मेरे रब! तू मुझे अपनी तरफ से पाकीज़ा औलाद अता

طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَاۗءِ ۝ فَنَادَتْهُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ

फरमा। यक़ीनन तू दुआ को सुनने वाला है। तो उन को फरिश्तों ने आवाज़ दी

وَهُوَ قَاۗىِٕمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ

जब के वो खड़े हुए मेहराब में नमाज़ पढ़ रहे थे के अल्लाह आप को बशारत देते हैं

بِيَحْيٰى مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا

यहया की जो तसदीक़ करने वाले होंगे अल्लाह के कलिमे की और सय्यद होंगे और औरतों से बेरग़बत पाकदामन

وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ

होंगे और नबी होंगे, नेक लोगों में से होंगे। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब!

لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۭ

मेरे लिए लड़का कहां से होगा? हालांके मुझे बुढ़ापा पहोंच चुका है और मेरी बीवी बांझ है।

قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاۗءُ ۝ قَالَ رَبِّ

अल्लाह ने फरमाया इसी तरह अल्लाह करते हैं जो चाहते हैं। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब!

اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर कर दीजिए। अल्लाह ने फरमाया के तुम्हारी निशानी ये है के तुम इन्सानों से कलाम नहीं

ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۭ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّ

करोगे तीन दिन तक मगर इशारे से। और आप अपने रब को बहोत ज़्यादा याद कीजिए और

سَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾ وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ ع ١٢

सुब्ह व शाम तस्बीह कीजिए। और जब के फरिश्तों ने कहा

يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ

ऐ मरयम! यक़ीनन अल्लाह ने तुझ को मुन्तखब किया है और तुझ को पाकबाज़ बनाया है और तुझ को

عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ

तमाम जहान की औरतों पर मुन्तखब किया है। ऐ मरयम! तू अपने रब की इबादत कर

وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ ذٰلِكَ

और सजदा कर और रूकूअ करने वालों के साथ रूकूअ कर। ये

مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ط وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ

ग़ैब की खबरों में से है, हम इस को आप की तरफ वही करते हैं। और आप उन के पास मौजूद नहीं थे

اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ص

जब वो अपने क़लम (नेहर में) डाल रहे थे के कौन मरयम की कफालत करेगा?

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ

और आप उन के पास नहीं थे जब वो झगड़ रहे थे। जब फरिश्तों ने कहा

يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ص ق

ऐ मरयम! यक़ीनन अल्लाह तुम को बशारत देते हैं अपनी तरफ से कलिमे की

اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا

जिस का नाम मसीह ईसा इब्ने मरयम होगा, जो वजाहत वाले होंगे

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَيُكَلِّمُ

दुन्या और आखिरत में और मुक़र्रबीन में से होंगे। और वो इन्सानों से

النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَ كَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾

कलाम करेंगे गेहवारे में और बड़े हो कर के और सुलहा में से होंगे।

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ط

मरयम (अलैहस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे औलाद कहां से होगी, हालांके मुझे किसी इन्सान ने छुवा नहीं है।

قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ط اِذَا قَضٰٓى

तो अल्लाह ने फरमाया इसी तरह अल्लाह पैदा करते हैं जो चाहते हैं। जब वो किसी काम

اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾ وَيُعَلِّمُهُ

का फैसला करते हैं तो उस से केहते हैं के "कुन" हो जा, तो वो हो जाता है। और उस को अल्लाह

الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُوْلًا

किताब व हिकमत और तौरात और इन्जील की तालीम देंगे। और बनी इस्राईल की तरफ

اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ

रसूल बना कर भेजेंगे। (वो कहेंगे के) यक़ीनन मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से मोअजिज़ा

مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ

ले कर आया हूँ। ये के मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिन्दे की शक्ल की तरह बनाता

الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ

हूँ, फिर मैं उस में फूंक मारता हूँ, तो वो अल्लाह के हुक्म से (जानदार) परिन्दा बन जाता है। और

الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ

मैं अच्छा करता हूँ अन्धे को और बर्स वाले को और मैं मुर्दों को ज़िन्दा करता हूँ अल्लाह के हुक्म से।

وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ

और मैं तुम्हें बतला देता हूँ वो चीज़ें जो तुम खा कर आते हो और वो चीज़ें जो तुम अपने घरों में

فِيْ بُيُوْتِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

ज़खीरा कर के आते हो। यक़ीनन इस में निशानी है तुम्हारे लिए अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ

ईमान लाते हो। और मैं तसदीक़ करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझ से

مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ

पेहले थी और ताके मैं तुम्हारे लिए हलाल कर दूँ उन बाज़ चीज़ों को जो तुम पर हराम की गईं

وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से मोअजिज़ा ले कर आया हूँ। फिर अल्लाह से डरो

وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿٥٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ

और मेरा केहना मानो। यक़ीनन अल्लाह मेरा और तुम्हारा रब है, तो तुम उसी की इबादत करो।

هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٥١﴾ فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ

ये सीधा रास्ता है। फिर जब ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उन की तरफ से कुफ्र

الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ

महसूस किया तो फरमाया कौन मेरे मददगार हैं अल्लाह की तरफ? हवारीयीन केहने लगे

نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾

हम अल्लाह के (दीन के) मददगार हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाए हैं। और आप गवाह रहिए के यक़ीनन हम मुसलमान हैं।

رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا بِمَاۤ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا

ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए हैं उस पर जो आप ने उतारा और हम ने रसूल का इत्तिबा किया, तो आप

مَعَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿٥٣﴾ وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَیْرُ

हमें गवाही देने वालों के साथ लिख लीजिए। और उन कुफ्फार ने तदबीर की और अल्लाह ने भी तदबीर की। और अल्लाह

الْمٰكِرِیْنَ ﴿٥٤﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ یٰعِیْسٰۤى اِنِّیْ مُتَوَفِّیْكَ

बेहतरीन तदबीर करने वाले हैं। जब के अल्लाह ने फरमाया के ऐ ईसा! मैं आप को पूरा पूरा लेने वाला हूँ (जिस्म

وَ رَافِعُكَ اِلَیَّ وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا

व रूह समेत उठाने वाला हूँ) और आप को उठाने वाला हूँ अपने पास और आप को पाक करने वाला हूँ उन

وَ جَاعِلُ الَّذِیْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا

लोगों से जिन्हों ने कुफ्र किया और क़यामत के दिन तक आप के मुत्तबिईन को काफिरों के

اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ

ऊपर रखूंगा। फिर मेरी तरफ तुम्हें लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हारे दरमियान

بَیْنَكُمْ فِیْمَا كُنْتُمْ فِیْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٥﴾

फेसला करूंगा उस में जिस में तुम इखतिलाफ कर रहे थे।

فَاَمَّا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِیْدًا

फिर अलबत्ता वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया, मैं उन्हें सख्त अज़ाब दूंगा

فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿٥٦﴾

दुन्या और आखिरत में। और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा।

وَ اَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَیُوَفِّیْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ

और अलबत्ता वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे तो अल्लाह उन को उन का पूरा पूरा सवाब देंगे।

وَاللّٰهُ لَا یُحِبُّ الظّٰلِمِیْنَ ﴿٥٧﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَیْكَ

और अल्लाह ज़ालिमों से महब्बत नहीं करते। ये हम आप के सामने आयात की

مِنَ الْاٰيٰتِ وَ الذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿٥٨﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى

और मुहकम ज़िक्र की तिलावत करते हैं। यक़ीनन ईसा (अलैहिस्सलाम) का हाल

عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ

अल्लाह के नज़दीक आदम (अलैहिस्सलाम) के हाल की तरह है। जिन को अल्लाह ने मिट्टी से पैदा किया, फिर उन से

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٥٩﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ

फरमाया के हो जा, तो वो हो गए। ये हक़ है आप के रब की तरफ से इस लिए आप शक करने वालों में

مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ

से न हों। फिर जो भी आप से हुज्जतबाज़ी करे ईसा (अलैहिस्सलाम) के बारे में इस के बाद के आप

مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَ اَبْنَآءَكُمْ

के पास इल्म आया, तो आप केह दीजिए के तुम आओ, हम बुलाते हैं हमारे बेटों को और तुम्हारे बेटों को और हमारी

وَ نِسَآءَنَا وَ نِسَآءَكُمْ وَ اَنْفُسَنَا وَ اَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ

औरतों को और तुम्हारी औरतों को और अपनी जानों को और तुम्हारी जानों को।

نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾

फिर हम मुबाहला करें, फिर हम झूठों पर अल्लाह की लानत करें।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ

यक़ीनन ये सच्चा बयान है। और अल्लाह के सिवा कोई माबूद

اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾

नहीं। और यक़ीनन अल्लाह वही ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

ع ١٤ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ

फिर भी अगर वो मुंह मोड़ें तो यक़ीनन अल्लाह फसाद फैलाने वालों को खूब जानते हैं। आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब!

الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ

तुम आओ ऐसे कलिमे की तरफ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर है,

اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَ لَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّ لَا يَتَّخِذَ

ये के हम इबादत न करें मगर अल्लाह की और हम उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न ठेहराएं और हम में से

بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا

एक दूसरे को अल्लाह को छोड़ कर के रब न बनाएं। फिर अगर वो रूगरदानी करें

فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ

तो केह दो के तुम गवाह रहो के हम मुसलमान हैं। ऐ एहले किताब!

لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمَآ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ

तुम क्यूं हुज्जतबाज़ी करते हो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में हालांके तौरात

وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾ هٰٓاَنْتُمْ

और इन्जील नहीं उतारी गईं मगर उन के बाद। क्या तुम अक़्ल नहीं रखते? सुनो! तुम तो

هٰٓؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ

वो लोग हो के तुम ने हुज्जतबाज़ी की ऐसी चीज़ में जिस का तुम्हें इल्म है,

فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

फिर तुम क्यूं हुज्जतबाज़ी करते हो ऐसी चीज़ में जिस का तुम्हें कोई इल्म नहीं है। और अल्लाह जानता है

وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا

और तुम जानते नहीं हो। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) न यहूदी थे,

وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ

न नसरानी थे, लेकिन सिर्फ एक अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे, मुसलमान थे।

وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾ اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ

और मुशरिकीन में से नहीं थे। यक़ीनन तमाम इन्सानों में सब से ज़्यादा क़रीब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के अलबत्ता वो लोग हैं

لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ

जिन्हों ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का इत्तिबा किया और ये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं और वह लोग हैं जो ईमान लाए हैं।

وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ

और अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है। एहले किताब की एक जमाअत तो

مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ

चाहती है के काश के वो तुम्हें गुमराह कर दें। और वो गुमराह नहीं करते

اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ

मगर अपने आप को और उन्हें पता नहीं। ऐ एहले किताब!

لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ يٰٓاَهْلَ

तुम क्यूं कुफ्र करते हो अल्लाह की आयात के साथ इस हाल में के तुम गवाही देते हो? ऐ एहले

الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوْنَ

किताब! तुम क्यूं हक़ को बातिल के साथ मिलाते हो और हक़

الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٧١﴾ وَ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ ع ١٥

छुपाते हो हालांके तुम जानते हो? और एहले किताब की एक जमाअत ने

الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ

कहा के तुम ईमान लाओ उस कुरआन पर जो ईमान वालों पर उतारा गया दिन के

النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾

शुरू हिस्से में और तुम काफिर बन जाओ दिन के आखिरी हिस्से में, ताके ये भी मुर्तद हो जाएं।

وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى

और तुम अमीन मत समझना मगर उसी को जो तुम्हारे दीन पर चलता हो। आप केह दीजिए यक़ीनन हिदायत अल्लाह की हिदायत

اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ

है। (ऐसा इस वजह से करते हो) के किसी को दिया जाए उसी जैसा जो तुम्हें दिया गया या वो तुम से तुम्हारे रब

عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ

के पास हुज्जतबाज़ी करें। आप केह दीजिए यक़ीनन फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है। वो उसे देता है जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ

चाहता है। और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। वो अपनी रहमत के साथ खास करता है जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

चाहता है। और अल्लाह भारी फ़ज़्ल वाले हैं। और एहले किताब में से कुछ लोग ऐसे हैं के

مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ

अगर आप उसे अमीन बनाएं ढेरों माल पर तो भी उस को आप की तरफ अदा कर दे। और उन में कुछ लोग

اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ

ऐसे हैं के अगर आप उसे अमीन बनाएं एक दीनार पर भी, तो भी उस को आप की तरफ अदा न करे, मगर जब तक

عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا

आप उस पर (निगरां बन कर) खड़े रहें। ये इस वजह से के उन्हों ने कहा के इन उम्मीयों के लिए हम पर

فِي الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَ يَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ

कोई रास्ता नहीं। और ये अल्लाह पर झूठ केह रहे हैं और वो

يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ

जानते भी हैं। क्यूं नहीं! जो अपना अहद पूरा करे और डरे तो यक़ीनन अल्लाह

يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ

डरने वालों से महब्बत रखते हैं। यक़ीनन वो लोग जो अल्लाह के अहद के बदले में

وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ

और अपनी क़समों के बदले में थोड़ी क़ीमत लेते हैं, उन के लिए कोई हिस्सा नहीं है आखिरत

فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ

में और अल्लाह उन से कलाम नहीं करेगा और उन की तरफ क़यामत के दिन निगाह नहीं

الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٧﴾

करेगा और उन का तज़किया नहीं करेगा। और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ

और यक़ीनन उन में से एक जमाअत है जो अपनी ज़बानों को मोड़ती है किताब (के पढ़ने) में ताके तुम उसे

مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ

किताब में से समझो, हालांके वो किताब में से नहीं है। और वो केहते हैं के ये

مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह की तरफ से है, हालांके वो अल्लाह की तरफ से नहीं है। और वो अल्लाह पर झूठ केहते हैं

الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ

इस हाल में के वो जानते भी हैं। किसी इन्सान की ताक़त नहीं है के अल्लाह उसे

اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ

किताब और शरीअत और नुबूवत दे, फिर वो इन्सानों से कहे के

كُوْنُوْا عِبَادًا لِّىْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ

तुम अल्लाह को छोड़ कर मेरी इबादत करने वाले बन जाओ, लेकिन (वो तो कहेगा के) तुम रब्बानी बन जाओ

بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۙ﴿٧٩﴾

इस वजह से के तुम किताब की तालीम देते हो और इस वजह से के तुम खुद पढ़ते हो।

وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ

और वो तुम्हें इस बात का हुक्म नहीं देगा के तुम फरिश्तों और नबीयों को रब बना लो।

ع ١٠

اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾

क्या तुम्हें वो कुफ्र का हुक्म देगा इस के बाद के तुम मुसलमान हो?

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَاۤ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ

और जब के अल्लाह ने अम्बिया (अलैहिमुस्सलात वस्सलाम) से पुख्ता अहद लिया के जब मैं तुम्हें किताब

وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ

और हिक्मत दूं, फिर तुम्हारे पास रसूल आए जो सच्चा बतलाने वाला हो उस को जो तुम्हारे पास है

لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَ لَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَ اَخَذْتُمْ

तो तुम उस रसूल पर ईमान लाओगे और उन की नुसरत करोगे। अल्लाह ने फरमाया क्या तुम ने इक़रार किया और इस

عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ؕ قَالُوْۤا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا

पर मेरा अहद तुम ने क़बूल किया? अम्बिया ने कहा के हम ने इक़रार किया। अल्लाह ने फरमाया फिर तुम गवाह रहो,

وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ

मैं भी तुम्हारे साथ गवाही देने वालों में से हूँ। फिर उस के बाद जो रूगरदानी

ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ

करे तो वही लोग नाफरमान हैं। क्या फिर अल्लाह के दीन के अलावा को ये लोग

يَبْغُوْنَ وَلَهٗۤ اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

चाहते हैं? हालांके अल्लाह के सामने सर झुकाए हुए हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं

طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ

खुशी से और ज़बर्दस्ती से, और उसी की तरफ वो लौटाए जाएंगे। आप फरमा दीजिए के हम ईमान लाए अल्लाह पर

وَمَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ

और उस पर जो हम पर उतारा गया और उस पर जो इब्राहीम, और इस्माईल,

وَاِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَاۤ اُوْتِيَ مُوْسٰى

और इसहाक़, और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) और याकूब (अलैहिस्सलाम) के बेटों पर उतारा गया, और उस पर जो मूसा

وَ عِيْسٰى وَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۪ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ

(अलैहिस्सलाम) को दिया गया और ईसा (अलैहिस्सलाम) और दूसरे अम्बिया को दिया गया उन के रब की तरफ से। हम उन में

اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ

से किसी के दरमियान तफरीक़ नहीं करते। और हम अल्लाह ही के ताबेदार हैं। और जो इस्लाम के अलावा को

غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ

दीन के तौर पर तलब करेगा, तो उस की तरफ से हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा। और वो आखिरत में

مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا

खसारा उठाने वालों में से होगा। अल्लाह कैसे हिदायत देगा उस क़ौम को जिन्हों ने कुफ्र किया

بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَ شَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ

अपने ईमान लाने के बाद और शहादत देने के बाद के ये रसूल हक़ है, और उन के पास

الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُولٰٓئِكَ

रोशन मोअजिज़ात भी आ गए। और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देंगे। उन की सज़ा

جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَ الْمَلٰٓئِكَةِ

ये है के उन पर अल्लाह की लानत और फरिश्तों

وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ

और तमाम इन्सानों की लानत है। वो उस में हमेशा रहेंगे। उन से अज़ाब हलका नहीं

الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

किया जाएगा और उन को मोहलत नहीं मिलेगी। मगर वो लोग जिन्हों ने तौबा की

مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۟ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾

उस के बाद और इस्लाह की, तो यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا

यक़ीनन वो लोग जो काफिर हो गए अपने ईमान लाने के बाद, फिर वो कुफ्र में बढ़ गए,

لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿٩٠﴾

तो हरगिज़ उन की तौबा क़बूल नहीं की जाएगी। और वही लोग गुमराह हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ

यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और मर गए इस हाल में के वो काफिर थे, तो हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा

مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ؕ

उन में से किसी एक की तरफ से ज़मीन भर सौना, अगर्चे वो उस को फिदये के तौर पर दे दे।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾ ع ١٧ ٩

उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा, और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा।